८. मेरा विद्रोह

– *सूर्यबाला*

किवाड़ धीरे-से सरकाकर दबे पाँव घर में दाखिल होने की कोशिश करता हूँ पर कोने में बैठे पिता जी की निगाहें मुझे दबोच लेती हैं-

'किधर गए थे ?'

'लॉन्ड्री में कपड़े देने ।'

'तुम्हारे कपड़े क्या रोज लॉन्ड्री में धुलते हैं ?'

'रोज कब जाते हैं ?'

'बकवास मत करो ! दिन भर सड़कों पर मटरगश्ती करते फिरते हो, अपने कपड़े खुद नहीं धो सकते ?'

'हूँऽऽ !' मैं गुन्नाता हुआ ढीठ-सा अंदर आ जाता हूँ । मन तो करता है कि उनपर जवाबों के तीर चलाऊँ पर जानता हूँ-परिणाम वही होगा, उनका दहाड़ना-गरजना, मेरा कई-कई घंटों के लिए घर से गायब हो जाना और हफ्तों हम पिता-पुत्र का एक-दूसरे की नजरों से बचना, सामना पड़ने पर मेरा ढिठाई से गुजर जाना, माँ का रोना-धोना और पूर्व कर्मों को दोष देते हुए लगातार बिसूरते चले जाना ।

ठीक-ठीक याद नहीं आता कि यह सिलसिला कब से और कैसे शुरू हुआ । मैंने तो अपने आपको जब से जाना, ऐसा ही विद्रोही, उद्दंड और ढीठ । बचपन मेरे लिए बिलकुल एक शहद के प्याले जैसा ही था जिसे होंठों से लगाते-लगाते ही पिता की महत्त्वाकांक्षा का जहर उस प्याले में घुल गया था ।

अभी भी वह दिन याद आता है, जब माँ ने बाल सँवारे, किताबों का नया बैग मेरे कंधों पर लटका, मुझे पिता जी के साथ साइकिल पर बिठाकर स्कूल भेजा था । पिता जी तमाम दौड़-धूप कर मुझे कॉन्वेंट में दाखिल करा पाने में सफल हो गए थे ।

मैं अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने लगा । घर में पूरी तौर से हिंदी वातावरण, क्लास के जिन बच्चों के घरेलू माहौल भी अंग्रेजियत से युक्त थे, उनपर ही शिक्षिकाएँ भी शाबाशी के टोकरे उछालतीं क्योंकि वे छोटी उम्र में ही धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते । कक्षा में उन्हीं लड़कों का दबदबा रहता ।

माँ मुझे अच्छी तरह पढ़ा सकती थीं पर अंग्रेजी माध्यम होने की वजह से लाचार थीं । अतः सारी मेहनत पिता जी ही करते । मेरी इच्छा नहीं रहती थी उनसे पढ़ने की । मगर माँ की बात नहीं टाल सकता था । ऑफिस से आने के साथ ही सारी किताब-कॉपियों सहित मुझे

परिचय

जन्म : १९४३, वाराणसी (उ.प्र.)

परिचय : समकालीन व्यंग्य एवं कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट भूमिका और महत्त्व रखने वाली सूर्यबाला जी ने अभी तक १५० से अधिक कहानियाँ, उपन्यास और हास्य-व्यंग्य संबधित रचनाओं का लेखन कार्य किया है। आपको 'प्रियदर्शिनी पुरस्कार', 'घनश्यामदास सराफ पुरस्कार', 'व्यंग्य श्री' आदि अनेक पुरस्कार, सम्मान प्राप्त हुए हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'मेरे संधि पत्र', 'अग्निपाखी', 'यामिनी-कथा', 'इक्कीस कहानियाँ' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में सूर्यबाला जी ने बालमन की लालसाओं, पिता की महत्त्वाकांक्षाओं एवं अपेक्षाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है । इस पाठ में आपने बताया है कि किस तरह पिता की आकांक्षाओं से दबकर बालक-बालिकाओं की लालसाएँ दम तोड़ देती हैं । परिणामस्वरूप बच्चे विद्रोही बन जाते हैं और जब तक उन्हें समझ आती है तब तक काफी देर हो चुकी होती है । अतः हमें इन स्थितियों से बचना चाहिए ।

मौलिक सृजन

अपने जीवन में पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका को अधोरेखित करते हुए कृतज्ञता ज्ञापन करने वाला पत्र लिखो ।

घेरकर पढ़ाना-रटाना शुरू कर देते । शायद उनकी मेहनत के ही बल पर मैं आठवीं कक्षा तक पहुँचा हूँ ।

एक बार पूरी क्लास पिकनिक पर जा रही थी । पिता जी ने मना किया । मेरे जिद करने पर माँ और पिता जी में भी झिक-झिक होने लगी । मैं अड़ा ही रहा । परिणामस्वरूप पहले समझाया, धमकाया और डाँटा गया और सबसे आखिर में दो चाँटे लगाकर नालायक करार दिया गया । मैं बड़ा क्रोधित हुआ ।

कभी 'डोनेशन' या सालाना जलसे आदि के लिए चंदे वगैरह की छपी पर्चियाँ लाता तो पिता जी झल्ला पड़ते । एक-दो रुपये देते भी तो मैं अड़ जाता कि बाकी लड़के दस-दस, बीस-बीस रुपये लाते हैं, मैं क्यों एक-दो ही ले जाऊँ ? मैंने इस बारे में माँ से बात की पर माँ भी इसे फिजूल खर्चा मानती थीं ।

रमन की 'वर्षगाँठ' की बात तो मैं कभी भूल ही नहीं सकता । सबसे पहले उसने मुझे ही बताया था कि अगले महीने उसकी वर्षगाँठ है । मैं अंदर-बाहर एकदम खुशी से किलकता घर पहुँचा था । मैं शायद रमन से भी ज्यादा बेसब्री से उसकी वर्षगाँठ का इंतजार कर रहा था; क्योंकि रमन ने अपनी वर्षगाँठ की तैयारियों का जो चित्र खींचा था, उसने मुझे पूरे एक महीने से बेचैन कर रखा था ।

लेकिन उस दिन पिता जी ने मुझे एकदम डपट दिया-''नहीं जाना है ।'' मैंने जोर-जोर से लड़ना, जिद मचाना और रोना-चिल्लाना शुरू कर दिया । गुस्से में पिता जी ने एक भरपूर थप्पड़ गालों पर जड़ दिया । गाल पर लाल निशान उभर आए । उस दिन पहली बार माँ ने मेरे गालों पर उँगलियाँ फेर रो पड़ी थीं और पिता जी से लड़ पड़ी थीं । पिता जी को भी शायद पछतावा हुआ था । माँ ने मेरा मुँह धुलाया, गाल पर दवा लगाई और बाजार से बिस्कुट का एक डिब्बा मँगाकर पिता जी के साथ रमन के घर भिजवा दिया ।

रमन के पापा दरवाजे पर ही मिल गए थे । खूब खुश होकर उन्होंने रमन को बुलाया । फिर उनकी दृष्टि गालों पर पड़ी । पिता जी जल्दी से बोले, ''आते-आते सीढ़ियों से गिर गया ... पर मैंने कहा, ''तुम्हारे दोस्त का जन्मदिन है, जरूर जाओ ।''

मेरा दिमाग गुस्से से पागल हो गया । मन किया, जोर से चीख पड़ूँ । रमन के पापा के सामने ही-कि ये झूठे, मक्कार और निर्दयी हैं, मुझे

श्रवणीय

रेडियो, दूरदर्शन, यू ट्यूब से शौर्य कथा/गीत सुनो और सुनाओ ।

पीटकर लाए हैं और यहाँ झूठ बोल रहे हैं । बोला कुछ नहीं, बस गुस्से से उन्हें घूरता रमन की उँगली पकड़े अंदर चला गया ।

अंदर जाकर तो मुझे लगा कि मैं लाल परी के जादुई देश में आ गया हूँ । ढेर-के-ढेर झूलते रंग-बिरंगे गुब्बारे, रिबंस, प्रेजेंट्स, ट्रॉफियाँ-गुलदस्ते-सा सज्जा, उल्लास से हमेशा हँसते-से उसके मम्मी-डैडी । घर लौटकर मैंने पहला प्रश्न माँ से यही किया-'तुम और पिता जी मेरा जन्मदिन क्यों नहीं मनाते ?'

उत्तर में पिता जी की झिड़की ने उसके प्रति उपेक्षा व आक्रोश को और भी बढ़ा दिया । शायद धीरे-धीरे इसी उपेक्षा और आक्रोश का स्थान विद्रोह लेने लगा । अनजाने में मेरे अंदर पिता जी का एक शत्रु पैदा हो गया, जो हर समय पिता जी को तंग करने, दुखी करने और उनसे अपने प्रति किए गए अन्यायों के विरुद्ध बदला लेने की स्कीमें बनाता । चूँकि पिता जी और पढ़ाई एक-दूसरे के पर्यायवाची बन गए थे, अतः पढ़ाई से भी मुझे उतनी ही चिढ़ हो गई थी जितनी पिता जी से ।

घर में छोटी बहन शालू और उससे छोटे मंटू के आगमन के साथ ही तंगहाली और भी बढ़ गई थी, शायद इसी वजह से मैं ज्यादा विद्रोही हो गया था । अब बात-बात पर पिटना एक आम बात हो गई थी । धीरे-धीरे पिटने का डर भी दिमाग से काफूर हो गया और मैं दुस्साहसी हो पिता जी के हाथ उठाते ही घर से भाग खड़ा होता ।

बस पढ़ाई पिछड़ती गई । फर्स्ट आने लायक शायद नहीं था पर सामान्य लड़कों से अच्छे नंबर तो मैं आसानी से ला सकता था । पढ़ाई से तो मुझे शत्रुता हो गई थी । पिता जी से बदला लेने के लिए अपना कैरियर चौपट करने तक में मुझे एक मजा मिलता, लगता पिता जी को नीचा दिखाने का इससे अच्छा उपाय दूसरा नहीं हो सकता ।

मुझे याद है कि पाँचवीं कक्षा में सातवीं पोजीशन लाने के बाद छठी कक्षा में मैं मेहनत करके थर्ड आया था सोचा था, पिछले साल से अच्छे नंबर लाने पर पिता जी खुश होंगे पर वे रिपोर्ट देखते ही खीझे थे-'चाहे कितना भी घोलकर पिला दूँ, पर तू रहेगा थर्ड -का-थर्ड ही ।' मेरा मन अपमान से तिलमिला गया । सोचा, चीखकर कहूँ-'अगले साल मैं फेल होऊँगा फेल ।'

अक्सर पेपर देकर लौटने पर इम्तहान का बोझ टलने की खुशी में उमंगता से घर लौटता तो बैठक में ही पिता जी मिलते-''कैसा किया पेपर ?'' मैं खुश होकर कहता, 'अच्छा' पर पिता जी के होंठ बिदक जाते, ''कह तो ऐसे रहे हो जैसे फर्स्ट ही आओगे ।''

खीझकर पेपर देकर लौटने पर तो खास तौर से उनका सामना करने

संभाषणीय

'भारत की संपर्क भाषा हिंदी है', इस कथन पर विचार करते हुए अपना मत प्रस्तुत करो ।

से कतराता, चिढ़ता और माँ के सामने भुन-भुनाकर अपना आवेश व्यक्त करता । शालू मुझे बच्ची लगती थी; पर जब से थोड़ी बड़ी होने के साथ उसने पिता जी-माँ का कहना मानना, उनसे डरना शुरू कर दिया है, मुझे उस चमची से चिढ़ हो गई है । नन्हे मंटू को गोद में लेकर उछालने-खेलाने की तबीयत होती है पर पिता जी उसे प्यार करते हैं, यह सोचकर ही मुझे उसे रोते रहने देने में शांति मिलती है ।

इस महीने पैसे की ज्यादा परेशानी है-टेरीकॉट की कड़क कॉलरवाली बुश्शर्ट जरूर सिलवाऊँगा, मेरे पास घड़ी क्यों नहीं है ? बिना घड़ी के परीक्षा नहीं दूँगा, साइकिल पंक्चर हो गई तो बस नहीं, ऑटोरिक्शा से किराया देकर घर लौटूँगा, हिप्पी कट बाल कटाऊँगा, माथे पर फुलाकर सँवारूँगा ... कर लें, जो कर सकते हों मेरा । हूँ ऽऽ .....

कई बार मन करता है-कोशिश करके एक बार फर्स्ट आ ही जाऊँ, लेकिन तभी अंदर से कोई चीखता है-नहीं, यह तो पिता जी की जीत हो जाएगी । वे इसे अपनी ही उपलब्धि समझेंगे; और ... और खुश भी तो होंगे, मेरा उनकी खुशी से क्या वास्ता ? अब उनका और कुछ वश नहीं चलता तो माँ को सुनाकर दहाड़ते हैं- ''ठीक है, मत पढ़े-लिखे । करे सारे दिन मटरगश्ती । मैं भी इस इम्तहान के बाद किसी कुली-कबाड़ी के काम पर लगा देता हूँ ।''

यही देख लीजिए, अभी नुक्कड़ की दुकान पर कुछ खरीदने आया ही था कि अचानक पिता जी सड़क से गुजरते दीखे । जानता हूँ, घर पर पहुँचकर खूब गरजेंगे-दहाड़ेंगे । लेकिन बाहरी दरवाजे पर आकर सन्न रह जाता हूँ । पिता जी को लगा कि उनके बेटे का भविष्य बरबाद हो गया है यह सोचकर वे गलियारे में खड़े-खड़े दीवार से कोहनियाँ टिकाए निश्शब्द कातर रो रहे हैं । मैं सन्नाटे में खिंचा अवाक खड़ा रह जाता हूँ । पिता जी का ऐसा बेहद निराश, आकुल-व्याकुल रूप मैंने इसके पहले कभी नहीं देखा था । जिंदगी में पहली बार मैंने अपने पिता को इतना विवश, इतना व्यथित और इतना बेबस देखा तो क्या पिता जी पहले भी कभी ऐसी ही अवश मजबूरियों के बीच रोए होंगे-मुझे लेकर ?

अब मुझे अपने किए पर पछतावा हुआ । पिता जी की दशा देखकर मैं मन-ही-मन दुखी हुआ । माँ से मिलकर मैंने सब कुछ बताया । आज माँ की खुशी का पारावार न था । उसने मुझे गले लगाया । उसकी आँखों से आँसू झरने लगे । वे दुख के नहीं खुशियों के थे । मेरी आँखों के विद्रोही अंगारे बुझने लगे हैं-मेरे अपने ही आँसुओं की धार से । मैं निःशब्द कह रहा हूँ-पिता जी ! मैं संधि चाहता हूँ । हाँ, मैं संधि चाहता हूँ ।

मैंने आपको गलत समझा, मुझे क्षमा कर दीजिए ।

—o—

पठनीय

किसी अंतरिक्ष यात्री की अंतरिक्ष यात्रा का अनुभव पढ़ो और चर्चा करो ।

लेखनीय

निम्नलिखित जगहों पर जाना हो तो तुम्हारा संपर्क किस भाषा से होगा लिखो :

चंडीगढ़ ------

अहमदाबाद ------

पुरी ------

रामेश्वरम ------

श्रीनगर ------

पेरिस ------

टोकियो ------

ब्राजिल ------

बीजिंग ------

इजराइल ------

शब्द वाटिका

किलकना = खुशी में चिल्लाना
डपटना = डाँटना
मटरगश्ती = मौज में घूमना
पारावार = सीमा

मुहावरे

आपे से बाहर होना = बहुत क्रोधित होना
अवाक खड़ा रहना = अचंभित हो जाना
काफूर होना = गायब हो जाना
नीचा दिखाना = अपमानित करना
तिलमिला जाना = गुस्सा होना
चौपट करना = बरबाद करना
पारावार न रहना = सीमा न रहना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) एक शब्द में उत्तर लिखो :

१. बेटे की मातृभाषा :
२. बेटे की शिक्षा की माध्यम भाषा :

(२) संक्षेप में लिखो :

१. रमन के 'जन्मदिन' पर न जाने देने के बाद लड़के द्वारा किया गया विद्रोह :
२. नुक्कड़ की दुकान से घर लौटने पर बेटे द्वारा देखा दृश्य :

(३) कारण लिखो :

१. अंग्रेजियत वाले परिवारों के बच्चों का दबदबा रहता था –
२. पिता जी झल्ला पड़ते थे –
३. लड़के की माँ उसे पढ़ा नहीं पाती थी –

(४) ऐसे प्रश्न बनाओ जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

साइकिल, बेसब्री, छपी पर्चियाँ, पारावार

(५) संजाल पूर्ण करो :

लाल परी के जादुई देश की विशेषताएँ

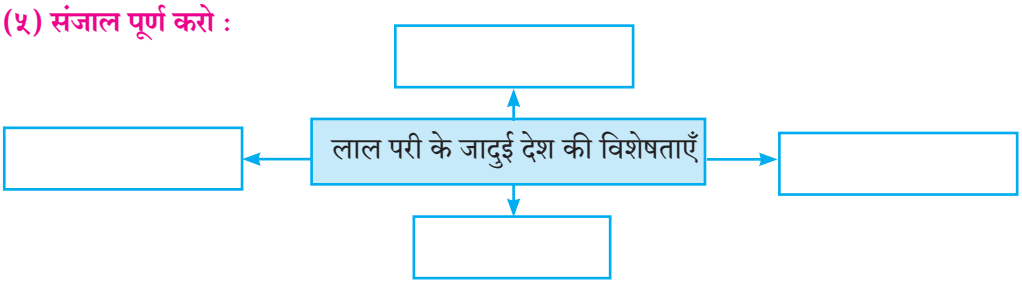

भाषा बिंदु

पाठों में आए हुए उपसर्ग और प्रत्ययवाले शब्द ढूँढ़ो तथा उनके उपसर्ग/प्रत्यय अलग करके मूल शब्द लिखो ।

उपयोजित लेखन

निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन लिखो :

स्थल/जगह, संपर्क, पुस्तक मेला, दिनांक, समय

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

अब्राहम लिंकन द्वारा प्रधानाध्यापक को लिखे हुए पत्र का चार्ट बनाकर कक्षा में लगाओ ।

J15539